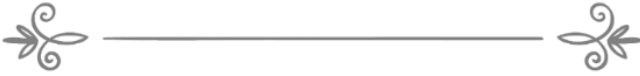


# इस्लाम की वशेषता



लेखक

शैखुल इस्लाम मुहम्मद बिन अब्दुल बहहाब

अनुवाद

अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

संशोधन

शफ़ीकुर्रहमान ज़ियाउल्लाह मदनी

# فضل الإسلام

(باللغة الهندية)



تأليف: شيخ الإسلام محمد بن عبد الوهاب

ترجمة: عطاء الرحمن ضياء الله

مراجعة: شفيق الرحمن ضياء الله المدني

**المكتب التعاوني للدعوة وتوعية الجاليات بالربوة**

هاتف: +966114454900 فاكس: +9661144970126 ص ب: 29465 الرياض: 11457

**ISLAMIC PROPAGATION OFFICE IN RABWAH**

P.O.BOX 29465 RIYADH 11457 TEL: +966 11 4454900 FAX: +966 11 4970126



OFFICERABWAH

# वषय सूची

सं क्षप्त परिचय .....	3
इस्लाम की वशेषता .....	4
इस्लाम स्वीकार करने की अनिवार्यता.....	10
इस्लाम की व्याख्या.....	15
अल्लाह तआला के फ़र्मान <i>وَمَنْ يَتَّبِعْ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ</i> की व्याख्या .....	19
कताबुल्लाह की पैरवी करके उसके अतिरिक्त अन्य वस्तुओं से बेनियाज़ होने की अनिवार्यता	22
इस्लाम के दावा से निकल जाने का वर्णन .....	24
इस्लाम में सम्पूर्ण रूप से प्रवेश करने और उसके अतिरिक्त अन्य धर्मों के परित्याग की अनिवार्यता	27
बिद्अत बड़े- बड़े गुनाहों से भी अ धक सख्त .....	32
अल्लाह तआला बिद्अती की तौबा स्वीकार नहीं करता .....	35
अल्लाह तआला के फ़र्मान <i>الْكَتَابِ لَمْ تُحَاجُّونَ فِي يَأْهَلٍ</i> इब्रुहिम..... وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ	37

اَللّٰهُ تَعَالٰى كَے فَرْمَانِ وَجْهَكَ لِالدِّينِ حَنِيفًا  
का वर्णन..... 41

इस्लाम की अजनबियत और गुरबा (अजनबियों) की  
वशेषता ..... 55

बिद्अतों पर चेतावनी..... 62

## संक्षिप्त परिचय

इस्लाम की विशेषता: इस पुस्तक में इस्लाम धर्म की विशेषता तथा इस तथ्य का वर्णन है कि इस्लाम सर्वश्रेष्ठ धर्म है। यही वह ईश्वरीय धर्म है, जिसके बिना कसी भी मनुष्य को सौभाग्य और नजात प्राप्त नहीं हो सकती। अतः समस्त लोगों पर इस्लाम को स्वीकार करना और उसके अतिरिक्त अन्य धर्मों को त्याग देना अनिवार्य है। जो व्यक्ति इस्लाम को छोड़कर कोई अन्य धर्म तलाश करेगा, तो अल्लाह तआला उसको कदापि स्वीकार नहीं करेगा। इस बात का भी उल्लेख है कि बिद्अत बड़े-बड़े गुनाहों से भी भीषण और भयंकर है। इस लए बिद्अतों से दूर रहना अनिवार्य है। तथा जिस प्रकार आरम्भ में इस्लाम के अनुयायी थोड़े थे, उसी प्रकार अन्त में भी इसके मानने वाले कम हो जायेंगे। अतः उस समय इस्लाम पर जमे रहने के लए शुभ सूचना है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ, जो अति  
मेहरबान और दयालु है।

## इस्लाम की वशेषता

अल्लाह तआला का फ़रमान है:

﴿الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي وَرَضِيتُ  
لَكُمْ الْإِسْلَامَ دِينًا<sup>1</sup>﴾

आज मैंने तुम्हारे लए तुम्हारे धर्म को सम्पूर्ण कर  
दिया, अपनी नेमतें तुमपर पूरी कर दीं और इस्लाम  
को तुम्हारे लए धर्म स्वरूप पसन्द कर लिया।

तथा फ़रमाया:

---

<sup>1</sup> सूरह अल-माइदा:3

﴿قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِن كُنْتُمْ فِي شَكِّ مِّن دِينِي فَلَا أَعْبُدُ الَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ وَلَكِن أَعْبُدُ اللَّهَ الَّذِي يَتَوَفَّاكُمْ﴾<sup>2</sup>

आप कह दीजिए क ए लोगो! यदि तुम मेरे धर्म के प्रति संदेह में हो, तो मैं उनकी उपासना नहीं करता, जिनकी उपासना तुम अल्लाह को छोड़कर करते हो। कन्तु मैं उस अल्लाह की उपासना करता हूँ, जो तुम्हें मृत्यु देता है।

तथा अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وءَامِنُوا بِرِسُولِهِ ۚ يُؤْتِكُمْ كَفْلًا مِّن رَّحْمَتِهِ ۗ وَيَجْعَل لَّكُمْ نُورًا تَمْشُونَ بِهِ ۗ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ﴾<sup>3</sup>

ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरते रहो और उसके पैगम्बर पर ईमान लाओ। अल्लाह तुम्हें अपनी रहमत (कृपा) का दोहरा भाग देगा और तुम्हें नूर (प्रकाश) प्रदान करेगा, जिसके प्रकाश में तुम चलो-

<sup>2</sup> सूरह यूनुस:104

<sup>3</sup> सूरा अल-हदीद:28

फरोगे और तुम्हारे गुनाह भी क्षमा कर देगा।  
अल्लाह क्षमा करने वाला दयालु है।

सहीह बुखारी में अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु  
अन्हुमा से वर्णित है क पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि  
व सल्लम ने फ़रमाया:

तुम्हारा तथी यहूदियों और ईसाइयों का उदाहरण  
उस आदमी के समान है, जिसने मज़दूरी पर कुछ  
मज़दूर रखे और कहा क कौन सुबह से दोपहर तक  
मेरा काम एक क़ीरात पर करेगा? तो यहूदियों ने  
काम किया। फ़र उसने कहा क कौन दोपहर से  
अस्र तक मेरा काम एक क़ीरात पर करेगा? तो  
ईसाइयों ने काम किया। फ़र उसने कहा क कौन  
अस्र की नमाज़ से सूरज डूबने तक दो क़ीरात पर  
करेगा? तो वह (अर्थात् इस दर्मयान काम करने  
वाले) तुम लोग हो। इस पर यहूदी और ईसाई  
क्रोधित हो गये और कहने लगे क यह क्या बात  
हुई? काम तो हम अधिक करें, पर मज़दूरी कम  
पायें? तो उसने कहा: क्या मैंने तुम्हारा कुछ हक़



मार लया है? वह बोले: नहीं। तो उसने कहा क यह मेरा फ़ज़ल (कृपा) है, जिसे चाहूँ, दूँ।

तथा सहीह बुखारी में अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह बयान करते हैं क पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

अल्लाह तआला ने हमसे पहले लोगों को जुमे के दिन से वंचित रखा। चुनांचे यहूदियों के भाग में शनिवार का दिन आया और ईसाइयों के भाग में रववार का। फर अल्लाह तआला ने हमें बरपा कया और जुमे के दिन से नबाज़ा। बिल्कुल ऐसे ही, वह क़यामत के दिन भी हमसे पीछे होंगे। हम दुनिया में अन्त में आये, कन्तु क़यामत के दिन सबसे आगे होंगे।

और सहीह बुखारी में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से तालीक़न वर्णित है क आपने फ़रमाया:

अल्लाह के निकट सबसे पसंदीदा और सरल धर्म मल्लते इब्राहीमी है।

उबै बिन कअब रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णत है, उन्होंने फ़रमाया:

तुम लोग सुन्नत और सराते मुस्तक़ीम -सीधे मार्ग- पर चलते रहो। क्यों क ऐसा नहीं हो सकता क कोई व्यक्ति सुन्नत और सराते मुस्तक़ीम पर रहकर अल्लाह का ज़िक्र करे और अल्लाह के डर से उसकी आँखें आँसू बहायें और फर उसे जहन्नम की आग छू ले। जो व्यक्ति सुन्नत और सराते मुस्तक़ीम पर चलकर अल्लाह का ज़िक्र करे, फर अल्लाह के डर से उसके रोंगटे खड़े हो जायें, उसका उदाहरण उस वृक्ष के समान है, जिसके पत्ते सूख चुके हों और सहसा आँधी आ जाये और उसके पत्ते झड़ जायें। उस व्यक्ति के गुनाह उसी तरह झड़ जाते हैं, जिस तरह उस वृक्ष के पत्ते। सराते मुस्तक़ीम और सुन्नत के अनुसार की हुई नियमत उपासना, उनके वरुध्द की हुई अधक उपासना से उत्तम है।

अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णत है, उन्होंने फ़रमाया:

बुद्धिमानों का सोना और उनका खाना-पीना क्या ही अच्छा है! यह मूर्खों के रात्रि-जाग्रण और रोज़ों को पीछे छोड़ देते हैं!! तक्रवा और यक्रीन के साथ की गई कण-बराबर नेकी, धोखे में पड़े हुए लोगों की पहाड़ बराबर उपासना से कहीं अधिक महान, श्रेष्ठ और वजनी है।

# इस्लाम स्वीकार करने की अनिवार्यता

अल्लाह तआला का फ़र्मान है:

﴿وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ  
الْخَسِرِينَ<sup>4</sup>﴾

जो व्यक्ति इस्लाम के अतिरिक्त कोई अन्य धर्म ढूँढे, उसका धर्म कदा प स्वीकार नहीं किया जाएगा और वह प्रलोक में घाटा उठाने वालों में से होगा।

तथा अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

﴿إِنَّ الدِّينَ عِنْدَ اللَّهِ الْإِسْلَامُ<sup>5</sup>﴾

निःसन्देह, अल्लाह के निकट धर्म इस्लाम ही है।

तथा फ़रमाया:

---

<sup>4</sup> सूरह आले-इम्रान:85

<sup>5</sup> सूरह आले-इम्रान:19

﴿وَأَنَّ هَذَا صِرَاطِي مُسْتَقِيمًا فَاتَّبِعُوهُ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ  
فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَن سَبِيلِهِ﴾<sup>6</sup>

और यही धर्म मेरा सीधा मार्ग है। अतः इसी मार्ग पर चलो और दूसरी पगडण्डियों पर न चलो क वह तुम्हें अल्लाह के मार्ग से अलग कर देंगी।

मुजाहिद कहते हैं क इस आयत में पगडण्डियों से अ भप्राय बिदआत एवं संदेह हैं।

आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से व र्णत है क अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

जिसने हमारे इस धर्म में कोई ऐसी चीज़ निकाली, जो धर्म का भाग नहीं है, तो वह मर्दूद (अस्वीकृत) है।<sup>7</sup>

एक दूसरी रिवायत में है:

जिसने कोई ऐसा काम किया, जिसपर हमारा आदेश नहीं है, तो वह काम मर्दूद (अस्वीकृत) है।<sup>8</sup>

---

<sup>6</sup> सूरह अल्-अन्आम:153

<sup>7</sup> बुखारी एवं मुस्लिम

सहीह बुखारी में अबू हरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह बयान करते हैं क रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

मेरी उम्मत का प्रत्येक व्यक्ति स्वर्ग में जाएगा, सवाय उस आदमी के, जो इन्कार कर दे। पूछा गया क स्वर्ग में प्रवेश करने से कौन इन्कार करेगा? तो आपने फ़रमाया: जिसने मेरी आज्ञा का पालन किया, वह स्वर्ग में प्रवेश करेगा और जिसने मेरी अवज्ञा की, उसने स्वर्ग में जाने से इन्कार किया।

और सहीह बुखारी में अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है क पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

अल्लाह के निकट सबसे नापसन्दीदा लोग तीन हैं: प्रथम: हूरम में बेदीनी (नास्तिकता) का प्रदर्शन करने वाला। द्वितीय: इस्लाम के अन्दर जाहि लयत

---

<sup>8</sup> सहीह मुस्लिम

का मार्ग ढूँढने वाला। तृतीयः कसी मुसलमान का अवैध खून बहाने का मुतालबा करने वाला।<sup>9</sup>

शैखुल इस्लाम इब्ने तै मय्या रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं:

पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फ़र्मान जाहि लयत का मार्ग में पैगम्बरों के लाये हुए धर्म के वरुध्द जाहि लयत का प्रत्येग मार्ग सम्मिलत है। चाहे वह सामान्य हो या कुछ खास लोगों का, यहूद एवं ईसाइयों का हो, मूर्तीपूजकों का हो या इनके अतिरिक्त कसी अन्य का।

और सहीह बुखारी में हुजैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णत है, उन्होंने फ़रमाया:

ऐ कारियों की जमाअत! सीधे मार्ग पर चलते रहो। यदि तुम सीधे मार्ग पर रहोगे, तो बहुत आगे निकल जाओगे। यदि दायें-बायें मुडोगे, तो अति पथ-भ्रष्ट हो जाओगे।

---

<sup>9</sup> सहीह बुखारी

और मुहम्मद बिन वज्जाह ने इस प्रकार वर्णन किया है क हुजैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु मस्जिद में प्रवेश करते हुए हल्कों के निकट खड़े होकर यह फ़रमाते।

वह अ धक वर्णन करते हैं क हमसे सुफ़यान बिन उययना ने मुजा लद से और मुजा लद ने शअबी से और शअबी ने मसरूक से वर्णन करते हुए कहा है क अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया:

बाद में आने हर वर्ष गुजरे हुए वर्षों से अ धक बुरा है। मैं यह नहीं कहता क फ़लाँ साल फ़लाँ साल से अ धक वर्षा वाला है, न यह कहता हूँ क फ़लाँ साल फ़लाँ साल से अ धक हरा-भरा है और न ही यह कहता हूँ क फ़लाँ अमीर फ़लाँ अमीर से श्रेष्ठ है, बल्कि वास्तवक बात यह है क तुम्हारे उलेमा और अच्छे लोग समाप्त हो जायेंगे। इसके पश्चात ऐसे लोग पैदा होंगे, जो धार्मिक मामलों को अपने वचार पर क्रियास करेंगे। जिसके कारण इस्लाम को ध्वस्त और नष्ट कर दिया जाएगा।



# इस्लाम की व्याख्या

अल्लाह तआला का फ़र्मान है:

﴿فَإِنْ حَاجُّوكَ فَقُلْ أَسْلَمْتُ وَجْهِيَ لِلَّهِ وَمَنِ اتَّبَعَنِ﴾<sup>10</sup>

“फर यदि यह आपसे झगड़ें, तो आप कह दें क मैंने और मेरे मानने वालों ने अल्लाह तआला के सामने अपना सर झुका दिया है।”

सहीह मुस्लिम में उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णत है क पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

“इस्लाम यह है क तुम इस बात की गवाही दो क अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के पैगम्बर हैं, नमाज़ स्थापत करो, ज़कात दो, रमज़ान के रोज़े रखो और मामर्थ्य हो तो अल्लाह के घर -कअबा- का हज्ज करो।”<sup>11</sup>

और सहीह हदीस में अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से मर्फूअन वर्णति है:

---

<sup>10</sup> सूरह आले-इम्रान: 20

<sup>11</sup> सहीह मुस्लिम

मुसलमान वह है, जिसकी ज़बान और हाथ से दूसरे मुसलमान सुरक्षित रहें।

और बहज बिन हकीम से वर्णित है, वह अपने बाप के वास्ते से अपने दादा से वर्णन करते हैं क उन्होंने पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इस्लाम के वषय में प्रश्न किया, तो आपने फ़रमाया:

“इस्लाम यह है क तुम अपना हृदय अल्लाह को सौंप दो, अपना मुख अल्लाह की ओर कर लो, फ़र्ज नमाज़ें पढो और फ़र्ज ज़कात दो।”<sup>12</sup>

अबू क़लाबा एक शामी (सीरियन) आदमी से वर्णन करते हैं क उसके बाप ने अल्लाह के पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रश्न किया क इस्लाम क्या है? तो आपने फ़रमाया:

“इस्लाम यह है क तुम अपना दिल अल्लाह के हवाले कर दो और मुसलमान तुम्हारी ज़ुबान और तुम्हारे हाथ से सुरक्षित रहें।” फर उन्होंने प्रश्न

---

<sup>12</sup> इस हदीस को इमाम अहमद ने रिवायत किया है।

क्या क इस्लाम का कौन-सा काम सर्वश्रेष्ठ है? तो आपने फ़रमाया: “ईमान।” उसने कहा क ईमान क्या है? तो आपने फ़रमाया: “ईमान यह है क तुम अल्लाह पर, उसके फ़रिश्तों पर, उसकी उतारी हुई पुस्तकों पर, उसके पैग़म्बरों पर और मरने के बाद दुबारा उठाए जाने पर वश्वास रखो।”<sup>13</sup>

---

<sup>13</sup> इस हदीस का शैख़ुल इस्लाम इब्ने तै मया ने “कताबुल ईमान” के अन्दर उल्लेख करने के बाद फ़रमाया है क इसे इमाम अहमद और मुहम्मद बिन नस्र मर्वज़ी ने रिवायत कया है।

# अल्लाह तआला के फ़र्मान وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ की व्याख्या

अल्लाह तआला का फ़र्मान है:

﴿وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ  
الْخٰسِرِينَ<sup>14</sup>﴾

और जो व्यक्ति इस्लाम के अतिरिक्त कोई अन्य धर्म तलाश करे, तो उसका धर्म हर गज़ स्वीकार नहीं किया जाएगा।

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह बयान करते हैं क पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

क़यामत के दिन बन्दों के आमाल उपस्थित होंगे। चुनांचे नमाज़ उपस्थित होगी और कहेगी क ऐ पालनहार! मैं नमाज़ हूँ! अल्लाह तआला फ़रमाएगा: तू ख़ैर पर है। फ़र ज़कात उपस्थित होगी और

---

<sup>14</sup> सूरह आले-इम्मान: 85

कहेगी क ऐ पालनहार! मैं जकात हूँ! अल्लाह तआला फ़रमाएगा: तू भी खैर पर है। फर रोज़ा उपस्थित होगा और कहेगा क ऐ पालनहार! मैं रोज़ा हूँ! अल्लाह तआला फ़रमाएगा: तू भी खैर पर है। इसके बाद बन्दे के शेष आमाल इसी प्रकार उपस्थित होंगे और अल्लाह तआला फ़रमाएगा: तुमसब खैर पर हो। फर इस्लाम उपस्थित होगा और कहेगा क ऐ पालनहार! तू सलाम है और मैं इस्लाम हूँ। अल्लाह तआला फ़रमाएगा: तू भी खैर पर है। आज मैं तेरे कारण से पकड़ करूँगा और तेरे ही कारण प्रदान करूँगा। अल्लाह तआला ने अपनी कताब कुर्आन मजीद में फ़रमाया:

﴿وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ  
الْخَسِيرِينَ﴾

“और जो व्यक्ति इस्लाम के अतिरिक्त कोई अन्य धर्म तलाश करे, तो उसका धर्म हर गज़ स्वीकार नहीं किया जाएगा और वह आ ख़रत में घाटा उठाने वालों में से होगा।”

इस हदीस को इमाम अहमद ने रिवायत किया है। और सहीह मुस्लिम में आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

“जिसने कोई ऐसा काम किया, जिसके बारे में हमारा आदेश नहीं है, तो वह काम मर्दूद (अस्वीकृत) है।” इस हदीस को इमाम अहमद ने भी रिवायत किया है।

# कताबुल्लाह की पैरवी करके उसके अतिरिक्त अन्य वस्तुओं से बेनियाज़ होने की अनिवार्यता

अल्लाह तआला का फ़र्मान है:

﴿وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ تَبْيِينًا لِّكُلِّ شَيْءٍ<sup>15</sup>﴾

“और हमने आपपर यह कताब उतारी है, जिसमें हर चीज़ का स्पष्ट उल्लेख है।”

सुनन नसाई आदि में है क नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ में तौरात का एक पन्ना देखा, तो फ़रमाया:

“ऐ खत्ताब के बेटे! क्या तुम ह़ैरत में पड़े हो! मैं तुम्हारे पास स्पष्ट और उज्ज्वल शरीअत लेकर आया हूँ। यदि मूसा भी जी वत होते और तुम मुझे

---

<sup>15</sup> सूरह अन्-नहल: 89



छोड़कर उनकी पैरवी करने लगते, तो पथभ्रष्ट हो जाते।”

एक दूसरी रिवायत में है:

“यदि मूसा भी जी वत होते, तो उन्हें भी मेरी पैरवी करनी पड़ती।”

यह सुनकर उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा:

“मैं अल्लाह से प्रसन्न हूँ उसे अपना पालनकर्ता मानकर, इस्लाम से प्रसन्न हूँ उसे अपना दीन समझकर और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रसन्न हूँ उन्हें अपना नबी मानकर।”

# इस्लाम के दावा से निकल जाने का वर्णन

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

﴿هُوَ سَمَّكُمُ الْمُسْلِمِينَ مِنْ قَبْلُ وَفِي هَذَا﴾<sup>16</sup>

“उसी अल्लाह ने तुम्हारा नाम सुसलमान रखा है, इस कुर्आन से पहले और इसमें भी।”

हारिस अश्अरी रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं क आपने फ़रमाया:

“मैं तुम्हें उन पाँच बातों का आदेश देता हूँ, जिनका अल्लाह तआला ने मुझे आदेश दिया है: शासक की बात सुनने और उसकी पैरवी करने का, जिहाद का, हिज़्रत का और मुसलमानों की जमाअत से जुड़े रहने का। क्यों क जो व्यक्ति जमाअत से बालशत बराबर भी दूर हुआ, उसने अपनी गर्दन से इस्लाम का पान निकाल फेंका। परन्तु यह क वह जमाअत की ओर

---

<sup>16</sup> सूरह अल्-हज्ज: 78

पलट आए। और जिसने जाहि लयत की पुकार लगाई, वह जहन्नमी है।” यह सुनकर एक व्यक्ति ने कहा क ए अल्लाह के पैगम्बर! चाहे वह नमाज़ पढ़े और रोज़े रखे? फरमाया: “हाँ, चाहे वह नमाज़ पढ़े और रोज़े रखे। अतः ए अल्लाह के बन्दो! तुम उस अल्लाह की पुकार लगाओ, जिसने तुम्हारा नाम मुसलमान और मो मन रखा है।”<sup>17</sup>

और सहीह बुखारी एवं मुस्लिम में है:

“जो जमाअत से बा लशत बराबर भी जुदा हुआ और इसी अवस्था में मर गया, उसकी मौत जाहि लयत की मौत होगी।”

तथा सहीह हदीस में है क पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

“क्या जाहि लयत की पुकार लगाई जा रही है और मैं तुम्हारे बीच मौजूद हूँ?”

---

<sup>17</sup> इस हदीस को इमाम अहमद और तिर्मज़ी ने रिवायत किया है और तिर्मज़ी ने हसन कहा है।

शौखुल इस्लाम अबुल अब्बास इब्ने तै मया फ़रमाते हैं:

“इस्लाम और कुर्आन के दावे के सवा हर दावा, चाहे वह नसब हो शहर का हो, कौम का हो, मस्लक का हो या पंथ का, सब जाहि लयत की पुकार में सम्मिलित है। बल्कि जब एक मुहाजिर और एक अन्सारी के बीच झगड़ा हो गया और मुहाजिर ने मुहाजिरों को पुकारा और अन्सारी ने अन्सारियों को आवाज़ दी, तो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: “क्या जाहि लयत की पुकार लगाई जा रही है, जब क मैं तुम्हारे बीच मौजूद हूँ?” और इस बात से आप बहुत अप्रसन्न हुए।” शौखुल इस्लाम इब्ने तै मया का कलाम समाप्त हुआ।

# इस्लाम में सम्पूर्ण रूप से प्रवेश करने और उसके अतिरिक्त अन्य धर्मों के परित्याग की अनिवार्यता

अल्लाह तआला का फ़र्मान है:

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ادْخُلُوا فِي السِّلْمِ كَآفَّةً﴾<sup>18</sup>

“ऐ ईमान वालो! इस्लाम में पूरे-पूरे प्रवेश कर जाओ।”

तथा फ़रमाया:

﴿أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يَزْعُمُونَ أَنَّهُمْ ءَامَنُوا بِمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنزِلَ مِنْ قَبْلِكَ﴾<sup>19</sup>

---

<sup>18</sup> सूरह अल्-बकरा: 208

<sup>19</sup> सूरह अन्-निसा: 60

“क्या आपने उन्हें नहीं देखा, जिनका दावा तो यह है क जो कुछ आपपर और जो कुछ आपसे पहले उतारा गया, उसपर उनका ईमान है।”

तथा अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

إِنَّ الَّذِينَ فَرَّقُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا شِيعًا لَسْتَ مِنْهُمْ فِي شَيْءٍ<sup>20</sup>

“निःसंदेह जिन लोगों ने अपने धर्म को अलग-अलग कर दिया और गुट-गुट बन गए, आपका उनसे कोई सम्बन्ध नहीं।”

इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा अल्लाह तआला के इस कथन:

﴿يَوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوهٌ وَتَسْوَدُّ وُجُوهٌ﴾<sup>21</sup>

“जिस दिन कुछ चेहरे चमक रहे होंगे और कुछ काले।”

की व्याख्या में कहते हैं:

---

<sup>20</sup> सूरह अल्-अन्आम: 159

<sup>21</sup> सूरह आले-इम्मान: 106

“अहले सुनन्त वल-जमाअत के चेहरे उज्जवल होंगे और अहले बिद्अत तथा साम्प्रदायिक लोगों के चेहरे काले होंगे।”

अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णत है, वह बयान करते हैं क अल्लाह के पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

“मेरी उम्मत पर बिल्कुल वैसा ही समय आएगा, जैसा क बनी इस्त्राईल पर आया था। यहाँ तक क यदि उनमें से कसी ने अपनी माँ के साथ खुल्लम-खुल्ला बलत्कार कया होगा, तो मेरी उम्मत में भी इस प्रकार का व्यक्ति होगा, जो ऐसा करेगा। तथा बनी इस्त्राईल बहत्तर फ़र्कों (दलों) में बट गए थे, कन्तु मेरी यह उम्मत तेहत्तर फ़र्कों में बट जाएगी। उनमें से एक के अतिरिक्त बाकी सब नरकवासी होंगे।” सहाबा ने पूछा क ऐ अल्लाह के पैगम्बर! वह नजात पाने वाला फ़र्का कौन सा होगा? तो आपने फ़रमाया: “वह जो उस मार्ग पर चले, जिसपर मैं हूँ और मेरे सहाबा हैं।”

जो मो मन अल्लाह तआला से मुलाक़ात की आशा रखता है, उसे इस स्थान पर सादिक व मस्टूक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस वशेष रूप से आपके फ़र्मान “जिस तरीके पर मैं हूँ और मेरे साथी हैं” पर गौर करना चाहिए। यह हदीस कतनी बड़ी नसीहत है, उन दिलों के लए जिनमें ज़िन्दगी की ज़रा भी रमक़ बाकी है। इस हदीस को इमाम तिर्मज़ी ने रिवायत किया है तथा उन्होंने इसे अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु के वास्ते से रिवायत करके सहीह कहा है। अल्बत्ता इस रिवायत में जहन्नम का उल्लेख नहीं है। यह हदीस मुस्नद अहमद और सुनन अबू दाऊद में मुआवया रज़ियल्लाहु अन्हु के तरीक़ से वर्णित है, जिसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह फ़र्मान भी है:

“मेरी उम्मत में एक ऐसी क़ौम प्रकट होगी, जिनकी नसों में ख़्वाहिशात इस प्रकार घुस जाएंगी, जिस प्रकार पागल कुत्ते के काटने से पैदा होने वाली बीमारी काटे हुए व्यक्ति की नसों में प्रवेश कर जाती है। यहाँ तक क उसके शरीर की कोई नस और कोई जोड़ उसके प्रभाव से सुरक्षित नहीं रहता।”



इससे पहले पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह फ़र्मान उल्लिखत हो चुका है कः

“इस्लाम में जाहि लयत का तरीका ढूँढने वाला (अल्लाह के निकट तीन सबसे नापसंदीदा लोगों में से है।)”

# बिद्अत बड़े-बड़े गुनाहों से भी अ धक सख्त

अल्लाह तआला का फ़र्मान है:

﴿إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ﴾<sup>22</sup>

“अल्लाह तआला अपने साथ शर्क कए जाने को क्षमा नहीं करेगा और इसके अतिरिक्त जिसे चाहेगा, क्षमा कर देगा।”

तथा अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

﴿فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا لِّيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ﴾<sup>23</sup>

“और उससे बढ़कर अत्याचारी कौन होगा, जो अल्लाह तआला पर बिना कसी प्रमाण के झूठा आरोप लगाता है।”

तथा अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

---

<sup>22</sup> सूरह अन्-निसा: 48

<sup>23</sup> सूरह अल्-अन्आम: 144

﴿لِيَحْمِلُوا أَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَمِنْ أَوْزَارِ الَّذِينَ يُضِلُّونَهُمْ  
بِغَيْرِ عِلْمٍ أَلَا سَاءَ مَا يَزِرُونَ﴾<sup>24</sup>

“ता क क़यामत के दिन यह लोग अपने पूरे बोझ के साथ ही उन लोगों के बोझ के भी भागीदार हों, जिन्हें अनजाने में पथ-भ्रष्ट करते रहे। देखो तो कैसा बुरा बोझ उठा रहे हैं।”

और सहीह बुखारी में है क पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़वारिज के वषय में फ़रमाया:

“उन्हें जहाँ भी पाओ, क़त्ल कर दो। यदि मैंने उन्हें पाया, तो क्रौमे आद के क़त्ल के समान क़त्ल करूँगा।”<sup>25</sup>

तथा सहीह (मुस्लिम) में है क पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अत्याचारी शासकों को क़त्ल करने से रोका है, जब तक वह नमाज़ पढ़ते हों।

और जरीर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु से व र्णत है क एक आदमी ने ख़ैरात दिया। उसके

<sup>24</sup> सूरह अन्-नहल: 25

<sup>25</sup> सहीह बुखारी एवं सहीह मुस्लिम

बाद लोगों ने खैरात देना आरम्भ कर दिया, तो पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

जिसने इस्लाम में कोई अच्छा तरीका निकाला, तो उसे उसका अज़्र -बदला- मलेगा और उन लोगों का अज़्र भी, जो इसके बाद उसपर अमल करेंगे। कन्तु अमल करने वालों के अज़्र में कोई कमी नहीं होगी। और जिसने इस्लाम में कोई बुरा तरीका अ वष्कार किया, तो उसपर उसका गुनाह होगा और उन लोगों का भी गुनाह होगा, जो उसपर अमल करेंगे। कन्तु इन अमल करने वालों के गुनाह में कोई कमी नहीं होगी। इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।

तथा सहीह मुस्लिम में अबू हुरैरा रज़िययल्लाहु अन्हु के द्वारा इसी के समान एक अन्य हदीस वर्णित है, जिसके शब्द यह हैं:

जिसने कसी हिदायत -मार्गदर्शन- की ओर बुलाया..... और जिसने कसी गुमराही की ओर बुलाया।

अल्लाह तआला बिद्अती की  
तौबा स्वीकार नहीं करता

यह बात अनस रज़ियल्लाहु अन्हु की (मर्फुअ) हदीस और हसन बसरी की मुर्सल हदीस से प्रमाणित है। इब्ने वज़्ज़ाह ने अय्यूब से बयान किया है कि उन्होंने फ़रमाया कि हमारे बीच एक आदमी था, जो कोई असत्य वचन रखता था। फिर उसने वह वचन त्याग दिया, तो मैं मुहम्मद बिन सीरीन के पास आया और कहा: क्या आपको पता है कि अमुक ने अपना वचन त्याग दिया है?

तो उन्होंने कहा: अभी देखो तो सही, वह किस दिशा में जाता है? ऐसे लोगों के सम्बन्ध में जो हदीस आई है, उसका यह अन्तिम भाग उसके प्रारंभिक भाग से अधिक सख्त है कि वह इस्लाम से निकल जाएंगे, फिर उसकी ओर पुनः वापस नहीं लौटेंगे।

इमाम अहमद बिन हम्बल -रहमतुल्लाहि अलैहि- से इसका अर्थ पूछा गया, तो आपने फ़रमाया: ऐसे आदमी को तौबा की तौफ़ीक़ नहीं होती।

अल्लाह तआला के फ़र्मान  
يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تُحَاجُّونَ فِي إِبْرَاهِيمَ....  
وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ  
का वर्णन

अल्लाह तआला का फ़र्मान है:

﴿يَأْهَلِ الْكِتَابِ لِمَ تُحَاجُّونَ فِي إِبْرَاهِيمَ وَمَا أُنزِلَتِ التَّوْرَةُ وَالْإِنْجِيلَ إِلَّا مِنْ بَعْدِهِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٦٥﴾ هَذَا نَسْتُمْ هَؤُلَاءِ حَاجَّجْتُمْ فِيمَا لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ فَلِمَ تُحَاجُّونَ فِيمَا لَيْسَ لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦٦﴾ مَا كَانَ إِبْرَاهِيمُ يَهُودِيًّا وَلَا نَصْرَانِيًّا وَلَكِنْ كَانَ حَنِيفًا مُسْلِمًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ﴾<sup>26</sup>

“ऐ अहले कताब (यहूद एवं नसारा)! तुम इब्राहीम के वषय में क्यों झगड़ते हो, हालाँक तौरात और इन्जील तो उनके बाद उतरी हैं? क्या फर भी तुम नहीं समझते? सुनो! तुम उसमें झगड़ चुके हो, जिसका तुम्हें ज्ञान था। फर तुम उस बात में क्यों झगड़ते हो, जिसका तुम्हें ज्ञान नहीं? और अल्लाह तआला जानता है तथा तुम नहीं जानते। इब्राहीम न तो यहूदी थे, न ईसाई। बल्कि वह तो एकांत और शूध्द मुसलमान थे और मुश्रक -अनेकेश्वरवादी- नहीं थे।

और अल्लाह तआला का फ़र्मान है:

<sup>26</sup> सूरह आले-इम्मान: 65-67



﴿وَمَنْ يَرْغَبْ عَن مِّلَّةِ إِبْرَاهِيمَ إِلَّا مَن سَفِهَ نَفْسَهُ وَلَقَدِ اصْطَفَيْنَاهُ فِي الدُّنْيَا وَإِنَّهُ فِي الْآخِرَةِ لَمِنَ الصَّالِحِينَ﴾<sup>27</sup>

“और इब्राहीम के धर्म से वही मुँह मोड़ेगा, जो मूर्ख होगा। हमने तो उन्हें दुनिया में भी चुन लया था और आ खरत में भी वह सदाचारियों में से हैं।”

इस वषय में ख्वारिज से सम्बन्धित हदीस मौजूद है, जो गुजर चुकी है। तथा सहीह हदीस में है क नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

“अबू फलाँ के आल (अर्थात अमुक व्यक्ति के परिजन) मेरे दोस्त नहीं। मेरे दोस्त मुत्तक्री (संयमी, ईशभय रखने वाले) लोग हैं।”

और सहीह हदीस में अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णत है, अल्लाह के पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से वर्णन कया गया: कसी सहाबी ने कहा क मैं गोशत नहीं खाऊँगा, दूसरे ने कहा क मैं रात भर नमाज़ पढ़ूँगा और नहीं सोऊँगा, तीसरे ने कहा क मैं औरतों के समीप नहीं जाऊँगा, चौथे ने कहा

<sup>27</sup> सूरह अल्-बकरा: 130

क मैं लगातार रोज़ा रखूँगा और नागा नहीं करूँगा।  
इनकी बातें सुनकर पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व  
सल्लम ने फ़रमाया:

“कन्तु मेरा हाल यह है क मैं रात को नमाज़  
पढता हूँ और सोता भी हूँ, रोज़ा रखता हूँ और नागा  
भी करता हूँ तथा पत्नियों के पास भी जाता हूँ और  
गोशत भी खाता हूँ। तो जिसने मेरी सुन्नत से मुँह  
मोड़ा, वह मुझसे नहीं।”

गौर कीजिए क जब कुछ सहाबा ने इबादत के  
उद्देश्य से दुनिया से कट जाने की इच्छा प्रकट की,  
तो उनके बारे में यह कठोर बात कही गई और  
उनके काम को सुन्नत से मुँह मोड़ना बताया गया।  
ऐसे में अन्य बिद्अतों और सहाबा के अतिरिक्त  
अन्य लोगों के बारे में आपका क्या वचार है?

अल्लाह तआला के फ़र्मान **فَأَقِمْ**  
**وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا** का वर्णन

अल्लाह तआला का फ़र्मान है:

﴿فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا فِطْرَتَ اللَّهِ الَّتِي فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا لَا تَبْدِيلَ لِخَلْقِ اللَّهِ ذَلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ﴾<sup>28</sup>

“आप एकांत होकर अपना मुँह दीन की ओर कर लें। (यही) अल्लाह तआला की वह फ़तरत (प्रकृति) (है), जिस पर उसने लोगों को पैदा किया है। अल्लाह की सृष्टि को बदलना नहीं है। यही सीधा दीन है, कन्तु अधिकांश लोग नहीं जानते।”

तथा फ़रमाया:

﴿وَوَصَّي بِهَا إِبْرَاهِيمَ بَنِيهِ وَيَعْقُوبَ يَبْنَئِي إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَى لَكُمُ الدِّينَ فَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنتُمْ مُسْلِمُونَ﴾<sup>29</sup>

“और इसी इब्राहीमी धर्म की वसीयत इब्राहीम ने और याक़ूब ने अपनी-अपनी संतान को की क ए मेरे बेटो! अल्लाह तआला ने तुम्हारे लए इस धर्म को पसन्द कर लिया है। तो सावधान! तुम मुसलमान होकर ही मरना।”

<sup>28</sup> सूरह अर्-रूम: 30

<sup>29</sup> सूरह अल्-बकरा: 132

तथा अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

﴿ثُمَّ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ أَنْ اتَّبِعْ مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ﴾<sup>30</sup>

फर हमने आपकी ओर यह वह्य भेजी क आप मल्लते इब्राहीमी का अनुसरण कीजिए, जो क मुवह्हिद (एकेश्वरवादी) थे और मुश्रकों में से न थे।

इब्ने मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णत है क पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

प्रत्येक नबी के अम्बिया में से कुछ दोस्त होते हैं और उनमें से मेरे दोस्त इब्राहीम हैं, जो मेरे बाप और मेरे पालनहार के खलील (दोस्त) हैं। इसके बाद आपने यह आयत पढ़ी:

﴿إِنَّ أَوْلَى النَّاسِ بِإِبْرَاهِيمَ لَلَّذِينَ اتَّبَعُوهُ وَهَذَا النَّبِيُّ وَالَّذِينَ ءَامَنُوا وَاللَّهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِينَ﴾<sup>31</sup>

---

<sup>30</sup> सू्रह अन्-नहल: 123

<sup>31</sup> सू्रह आले इम्मान: 68

“सबसे अधिक इब्राहीम से निकट वह लोग हैं, जिन्होंने उनका अनुसरण किया और यह नबी और वह लोग जो ईमान लाए, और मोमनों का दोस्त अल्लाह है।”

इस हदीस को तिर्मजी ने रिवायत किया है।

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है, वह बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

“अल्लाह तआला तुम्हारा शरीर और तुम्हारा धन नहीं देखता, बल्कि तुम्हारा दिल और तुम्हारा कार्य देखता है।”

बुखारी एवं मुस्लिम में इब्ने मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह कहते हैं कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

“मैं हौजे-कौसर पर तुम सबसे पहले उपस्थित रहूँगा। मेरे पास मेरी उम्मत के कुछ लोग उपस्थित होंगे। जब मैं उन्हें देने के लिए बढ़ूँगा, तो वह मुझसे रोक दिए जाएंगे। मैं कहूँगा: ऐ मेरे

पालनहार! यह तो मेरी उम्मत के लोग हैं! मुझसे कहा जाएगा क आपको पता नहीं क आपके बाद इन्होंने क्या-क्या बिद्अतें आ वष्कार कर ली थीं।”

और बुखारी एवं मुस्लिम में अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णत है क पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

“मेरी इच्छा थी क हम अपने भाईयों को देख लेते”

सहाबा ने कहा क ऐ अल्लाह के पैगम्बर! क्या हम आपके भाई नहीं? फ़रमाया: “तुम मेरे असहाब (साथी) हो। मेरे भाई वह हैं, जो अब तक नहीं आए।” सहाबा ने कहा क ऐ अल्लाह के पैगम्बर! आपकी उम्मत के जो लोग अभी तक पैदा नहीं हुए, आप उन्हें कैसे पहचान लेंगे? फ़रमाया: “क्या अति श्वेत और काले घोड़ों के बीच अगर कसी का चमकदार माथा और सफ़ेद पाँव वाला घोड़ा हो, तो क्या वह अपना घोड़ा नहीं पहचान पायेगा?” उन्होंने उत्तर दिया: हाँ, क्यों नहीं? तो आपने फ़रमाया: “मेरी उम्मत भी कयामत के दिन इस प्रकार उपस्थित होगी क वुजु के प्रभाव से उनके चेहरे

और अन्य वुजु के स्थान चमक रहे होंगे। मैं हौजे कौसर पर पहले से उनकी प्रतीक्षा कर रहा हूँगा। सुनो! क्रयामत के दिन कुछ लोग मेरे हौजे कौसर से ऐसे ही धुत्कार दिए जाएंगे, जिस प्रकार पराया ऊँट धुत्कार दिया जाता है। मैं उन्हें आवाज़ दूँगा क सुनो! इधर आओ! तो मुझसे कहा जाएगा क यह वह लोग हैं, जिन्होंने आपके बाद दीन में परिवर्तन की थी। मैं कहूँगा क फर तो दूर हो जाओ! दूर हो जाओ!”

और सहीह बुखारी में है क पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

जिस समय मैं हौजे कौसर पर रहूँगा, एक टोली प्रकट होगी! जब मैं उन्हें पहचान लूँगा, तो मेरे और उनके बीच से एक आदमी निकलेगा और उनसे कहेगा: इधर आओ! मैं पूछूँगा: कहाँ? वह कहेगा: अल्लाह की क़सम जहन्नम की ओर! मैं कहूँगा: इनका क्या मामला है? वह कहेगा: यह वह लोग हैं, जो आपके बाद दीन से फर गए थे। फर इसके बाद एक अन्य टोली प्रकट होगी। -इस टोली के बारे



में भी आपने वही बात कही, जो पहली टोली के बारे में कही थी।- इसके बाद आपने फ़रमाया: इनमें से मोक्ष प्राप्त करने वालों की संख्या भटके हुए ऊँटों के समान बहुत ही कम होगी।”

और बुखारी एवं मुस्लिम में इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा की हदीस है क पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

उस समय मैं भी वही कहूँगा, जो अल्लाह के नेक (सदाचारी) बन्दे -ईसा अलैहिस्सलाम- ने कहा था:

﴿وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَّا دُمْتُ فِيهِمْ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنْتُ أَنْتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ وَأَنْتَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ﴾<sup>32</sup>

“जब तक मैं उनके बीच रहा, उनपर गवाह रहा। फर जब तूने मुझे उठा लया, तो तू ही उनसे अवगत रहा और तू हर चीज़ की पूरी सूचना रखता है।”

तथा बुखारी एवं मुस्लिम में इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मर्फूअन रिवायत है:

<sup>32</sup> सूरह अल्-माइदा: 117

“हर बच्चा इस्लाम की फ़तरत पर पैदा होता है। फर उसके माँ-बाप उसे ईसाई, यहूदी या मजूसी बना देते हैं। जिस प्रकार क चौपाया सम्पूर्ण -बे ऐब- चौपाया जनता है। क्या तुम उनमें से कोई चौपाया ऐसा पाते हो, जिसके कान कटे-फटे हों? यहाँ तक क तुम ही स्वयं उसके कान चीर-काट देते हो। इसके बाद अबू हुँरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह आयत पढ़ी:

﴿فَظَرَّتْ أَللَّهُ أَلَّتِي فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا﴾<sup>33</sup>

“अल्लाह की वह फ़तरत, जिसपर उसने लोगों को पैदा किया है।”

हुजैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह कहते हैं:

“लोग पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से खैर -भलाई- के वषय में प्रश्न करते थे और मैं आपसे शर -बुराई- के बारे में पूछता था, इस डर से क मैं उसका शकार न हो जाऊँ। मैंने कहा क ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! हम जाहि लयत और बुराई में पड़े हुए

<sup>33</sup> सूरह अर्-रूम: 30

थे। फर अल्लाह तआला ने हमें खैर -भलाई- की नेमत से सम्मानित किया। तो क्या इस खैर के बाद भी फर कोई बुराई होगी? तो आपने फरमाया: हाँ! मैंने कहा: क्या इस बुराई के बाद फर खैर का जमाना आयेगा? फरमाया: “हाँ, कन्तु उसमें खोट होगी।” मैंने कहा क कैसी खोट होगी? आपने फरमाया: “कुछ लोग ऐसे होंगे, जो मेरी सुन्नत और हिदायत को छोड़कर दूसरों का तरीका अपनायेंगे। तुम्हें उनके कुछ काम उ चत मालूम होंगे और कुछ काम अनु चत।” मैंने कहा: क्या इस खैर के बाद फर बुराई प्रकट होगी? फरमाया: हाँ, भयानक फत्ने और नरक की ओर बुलाने वाले लोग पैदा होंगे। जो उनकी सुनेगा, उसे नरक में झोंक देंगे।”, मैंने कहा: ऐ अल्लाह के पैगम्बर! आप हमें उनके औसाफ़ बता दें। फरमाया: “वह हममें से ही होंगे और हमारी ही भाषा में बात करेंगे।” मैंने कहा: ऐ अल्लाह के पैगम्बर! यदि यह समय मुझे मल जाए, तो आप मुझे क्या आदेश देते हैं? फरमाया: मुसलमानों की जमाअत और उनके इमाम के साथ जुड़े रहना।” मैंने कहा क अगर उस समय

मुसलमानों की कोई जमाअत और उनका इमाम न हो, तो क्या करूँ? फ़रमाया: “ फर इन सभी फ़क्रों से अलग रहना, चाहे तुम्हें कसी पेड़ की जड़ से चमटना ही क्यों न पड़ जाए, यहाँ तक क इसी हालत में तुम्हारी मृत्यु हो जाए।”

इस हदीस को बुखारी एवं मुस्लिम ने रिवायत किया है, कन्तु मुस्लिम की रिवायत में इतनी वृद्धि है:

“इसके बाद क्या होगा? फ़रमाया: “ फर दज्जाल प्रकट होगा। उसके साथ एक नहर और एक जहन्नम होगी। जो उसकी जहन्नम में प्रवेश करेगा, उसका अज़्र साबित हो जाएगा और गुनाह माफ हो जाएंगे। और जो उसकी नहर में प्रवेश करेगा, उसका गुनाह वाजिब और अज़्र समाप्त हो जाएगा।” मैंने कहा: फर इसके बाद क्या होगा? फरमाया: “इसके बाद क़यामत आ जाएगी।”

अबुल आ लया फ़रमाते हैं:

“इस्लाम की शिक्षा प्राप्त करो। जब इस्लाम की शिक्षा प्राप्त कर लो, तो इससे मुँह न मोड़ो। सीधे मार्ग पर चलते रहो, क्योंकि क यही इस्लाम है। इसे

छोड़कर दाएं-बाएं न मुड़ो। और अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत पर अमल करते रहो और असत्य और भ्रष्ट अक्रायद और बिद्अतों के निकट न जाओ।”

अबुल आ लया -रहमतुल्लाहि अलैहि- के इस कथन पर गौर करो। कतना ऊँचा कथन है! और उनके उस समय का स्मरण करो, जिसमें वह इन भ्रष्ट अक्राइद एवं बिद्अतों से सावधान कर रहे हैं क जो इन गलत अक्राइद एवं बिद्अतों में पड़ जाए, वह मानो क इस्लाम से फर गया। कस प्रकार उन्होंने इस्लाम की व्याख्या सुन्नत -हदीस- से की है। उनका बड़े-बड़े और वद्वान ताबेईन के बारे में कताब व सुन्नत के दायरे से निकलने का डर अल्लाह तआला के इस फ़र्मान का अर्थ स्पष्ट कर देता है:

﴿إِذْ قَالَ لَهُ رَبُّهُ وَأَسْلِمْتُ قَالَ أَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ﴾<sup>34</sup>

---

<sup>34</sup> सूरह अल्-बकरा: 131

“जब उनके पालनहार ने उनसे कहा क आज्ञाकारी हो जाओ, तो उन्होंने कहा क मैं अल्लाह रब्बुल आलमीन का आज्ञाकारी हो गया।”

और इस फ़र्मान के अर्थ को भी:

﴿وَوَصَّي بِهَا إِبْرَاهِيمَ بَيْنِي وَيَعْقُوبَ يَبْنِي إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَىٰ لَكُمُ الدِّينَ فَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنتُمْ مُسْلِمُونَ﴾<sup>35</sup>

“इसी बात की वसीयत इब्राहीन ने और याक़ूब ने अपनी-अपनी संतान को की क ऐ मेरे बेटो! अल्लाह ने तुम्हारे लिए इस धर्म को पसन्द कर लिया है, तो तुम मुसलमान होकर ही मरना।”

तथा इस फ़र्मान के अर्थ को भी:

﴿وَمَنْ يَرْغَبْ عَن مِّلَّةِ إِبْرَاهِيمَ إِلَّا مَن سَفِهَ نَفْسَهُ﴾<sup>36</sup>

और इब्राहीम के धर्म से वही मुँह मोड़ेगा, जो मूर्ख होगा।

---

<sup>35</sup> सूरह अल्-बकरा: 132

<sup>36</sup> सूरह बकरह: 130

इसी प्रकार की और भी मूल बातें ज्ञात होंगी, जो मूल आधार की बुनियाद रखती हैं, परन्तु लोग इनसे निश्चेत हैं। अबुल-आ लया के कथन पर गौर करने से इस अध्याय में वर्णित हृदीसों और इन जैसी अन्य हृदीसों का भी अर्थ स्पष्ट हो जाएगा। परन्तु जो व्यक्ति यह और इन जैसी अन्य आयतों और हृदीसों को पढ़कर गुजर जाए और इस बात से संतुष्ट हो क वह इन खतरों का शकार नहीं होगा और सोचे क इसका सम्बन्ध ऐसे लोगों से है, जो कभी थे और अब समाप्त हो गए हैं, तो जान जाइये क यह व्यक्ति भी अल्लाह तआला की पकड़ से निडर है और अल्लाह की पकड़ से वही लोग निडर होते हैं, जो घाटा उठाने वाले हैं।

और अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह कहते हैं क अल्लाह के पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक लकीर खींची और फ़रमाया: यही अल्लाह का सीधा मार्ग है। फ़र उस लकीर के दाएं-बाएं कई लकीरें खींचीं और फ़रमाया: यह ऐसे मार्ग हैं, जिनमें से हर मार्ग पर

शैतान बैठा हुआ है और अपनी ओर बुला रहा है।  
इसके बाद आपने इस आयत की तिलावत की:

﴿وَأَنَّ هَذَا صِرَاطِي مُسْتَقِيمًا فَاتَّبِعُوهُ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ  
فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَن سَبِيلِهِ ذَٰلِكُمْ وَصَلَكُم بِهِ لَعَلَّكُمْ  
تَتَّقُونَ﴾<sup>37</sup>

और यही मेरा सीधा मार्ग है, तो तुम इसी पर  
चलो, और दूसरे मार्गों पर मत चलो क वह तुम्हें  
अल्लाह के मार्ग से अलग कर देंगे, इसी का  
अल्लाह तआला ने तुमको ताकीदी आदेश दिया है  
ता क तुम परहेजगार (ईशभय रखने वाले) बनो।  
इस हदीस को इमाम अहमद और नसाई ने रिवायत  
कया है।

---

<sup>37</sup> सूरह अल-अन्आम:1 53



# इस्लाम की अजनबियत और गुरबा (अजनबियों) की वशेषता

अल्लाह तआला का फ़र्मान है:

﴿فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُونِ مِن قَبْلِكُمْ أُولُوا بَقِيَّةِ يَنْهَوْنَ  
عَنِ الْفَسَادِ فِي الْأَرْضِ إِلَّا قَلِيلًا مِّمَّنْ أَنْجَيْنَا مِنْهُمْ ۗ وَاتَّبَعَ  
الَّذِينَ ظَلَمُوا مَا أَتَرَفُوا فِيهِ وَكَانُوا مُجْرِمِينَ﴾<sup>38</sup>

---

<sup>38</sup> सूरह हूद: 116

पस क्यों न तुमसे पहले लोगों में खैर वाले हुए, जो धरती पर दंगा फैलाने से रोकते, सवाय उन थोड़े लोगों के, जिन्हें हमने उनमें से नजात दी थी।

और अबू हरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से मफ़ूअन वर्णत है:

इस्लाम अजनबियत की अवस्था में आरम्भ हुआ था और शीघ्र ही पहले ही के समान अजनबी हो जाएगा। ऐसे में शुभ सूचना है ग़ुरबा (अजनबियों) के लिए।

इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है तथा इसे इमाम अहमद ने अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु के द्वारा रिवायत किया है, जिसमें यह वृद्धि है:

कहा गया क ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! ग़ुरबा कौन लोग हैं? तो आपने फ़रमाया: अल्लाह के मार्ग में अपने वतन तथा खानदान को छोड़ देने वाले।

और दूसरी रिवायत में है:

गुरबा वह लोग हैं, जो उस समय नेक और सदाचारी होंगे, जब अधिकांश लोग बिगड़ चुके होंगे।

इस हदीस को इमाम अहमद ने सअद बिन अबी वक्कास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है, जिसमें है:

पस उस समय खुशखबरी हो गुरबा के लए, जब लोगों के अन्दर फ़साद और बिगाड़ आ जाएगा।

इमाम तिर्मज़ी ने कसीर बिन अब्दुल्लाह के वास्ते से रिवायत किया है, वह अपने बाप के वास्ते से अपने दादा से रिवायत करते हैं क पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

खुशखबरी है उन गुरबा के लए, जो मेरी उन सुन्नतों को सुधारेंगे, जिन्हें लोग बिगाड़ चुके होंगे।

और अबू उमर्या से रिवायत है, वह कहते हैं क मैंने अबू सअलबा खु-शनी रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा क इस आयत के बारे में आप क्या कहते हैं:

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا عَلَيْكُمْ أَنفُسَكُمْ لَا يَضُرُّكُمْ مَن ضَلَّ إِذَا  
 39 أَهْتَدَيْتُمْ﴾

ऐ ईमान वालो! तुम अपनी चन्ता करो। यदि तुम सीधे मार्ग पर चलोगे, तो जो पथ-भ्रष्ट है, उससे तुम्हारा कोई नुकसान नहीं होगा।

तो अबू सअलबा ने कहा क अल्लाह की क़सम! इस आयत के बारे में मैंने सबसे अधिक जानकार अर्थात् अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रश्न किया था, तो आपने फ़रमाया:

बल्कि तुम आपस में एक दूसरे को भलाई का आदेश देते और बुराई से रोकते रहो। यहाँ तक क जब देख लो क लालच का अनुपालन किया जा रहा है, ख्वाहिशात की पैरवी की जा रही है, दुनिया को प्रधानता दी जा रही है और हर व्यक्ति अपने वचारधारा पर मगन है, तो अपनी चन्ता करो और जन साधारण की चन्ता अपने मन से निकाल दो। क्यों क तुम्हारे बाद ऐसे दिन आने वाले हैं, जिनमें

---

<sup>39</sup> अल्-माइदा: 105

दीन पर धैर्य से जमे रहने वाला आग का अंगारा पकड़ने वाले के समान होगा और उनमें अमल करने वाले को ऐसे पचास आदमियों के बराबर अज़्र मलेगा, जो तुम्हारे ही जैसा अमल करने वाले हैं। हमने कहा क क्या हममें से पचास आदमी या उनमें से पचास आदमी? तो आपने फ़रमाया: बल्कि तुममें से। इस हदीस को अबू दाऊद और तिर्मजी ने रिवायत किया है।

इब्ने वज़्ज़ाह ने इसी अर्थ की हदीस इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के तरीक़ से रिवायत की है:

तुम्हारे बाद ऐसे दिन आयेंगे, जिनमें धैर्य करने वाले और आज तुम जिस दीन पर हो, उसपर जमे रहने वाले को तुम्हारे पचास आदमियों के बराबर पुण्य मलेगा।

इसके बाद इब्ने वज़्ज़ाह ने फ़रमाया क हमसे मुहम्मद बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा क हमसे असद ने बयान किया, उन्होंने कहा क हमसे सुफ़यान बिन उययना ने अस्लम बसरी से और उन्होंने हसन के भाई सईद से रिवायत की, वह

मर्फूअन रिवायत करते हुए कहते हैं: मैंने सुफ़यान से कहा: क्या सईद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मर्फूअन रिवायत करते हैं? तो उन्होंने कहा: हाँ, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़र्माया:

आज तुम अपने पालनहार के शुध्द और स्पष्ट मार्ग पर हो, भलाई का आदेश देते हो, बुराई से रोकते हो और अल्लाह के मार्ग में जिहाद करते हो। अभी तक तुम्हारे अन्दर दो नशे प्रकट नहीं हुए हैं; एक जिहालत का नशा और दूसरा जीवन से प्यार का नशा। परन्तु शीघ्र ही तुम्हारी यह हालत बदल जायेगी। तुम न भलाई का आदेश दोगे, न बुराई से रोकोगे और न ही अल्लाह के मार्ग में जिहाद करोगे। तुम्हारे अन्दर दोनों नशे प्रकट जो जाएंगे। उस समय क़ताब एवं सुन्नत पर जमे रहने वाले को पचास आद मर्यों के बराबर पुण्य मलेगा। पूछा गया क क्या उनके पचास आदमी? आपने फ़रमाया: नहीं बल्कि तुम्हारे पचास आद मर्यों के बराबर।

इब्ने वज्जाह ने एक दूसरी सनद से मुआफ़री से रिवायत किया है, वह बयान करते हैं क अल्लाह के पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

खुशखबरी है उन ग़ुरबा कै लए क जब कताबुल्लाह को छोड़ दिया जाएगा, तो वह उसपर अमल करेंगे और जब सुन्नत की रोशनी बुझा दी जाएगी, तो वह उसपर अमल करके ज़िन्दा करेंगे।

## बिद्अतों पर चेतावनी

इर्बाज़ बिन सारिया रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णत है, वह बयान करते हैं क पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें एक बड़ी ही प्रभावशाली नसीहत की, जिससे हमारे दिल काँप उठे और आँखें आँसू बहाने लगीं। हमने कहा क ऐ अल्लाह के पैगम्बर! यह तो अल-वदाई नसीहत जान पड़ती है। आप हमें वसीयत कीजिए। तो आपने फ़रमाया:

मैं तुम्हें अल्लाह से डरने तथा अमीर की बात मानने और सुनने की वसीयत करता हूँ। भले ही कोई दास तुम्हारा अमीर -शासक- बन जाए। तुममें से जो व्यक्ति जीवत रहेगा, वह बहुत मतभेद



देखेगा। ऐसी अवस्था में तुम मेरी सुन्नत और मेरे बाद हिदायत से सम्मानित खुलफ़ाये रा शदीन का तरीका अपनाए रखना और उसे दृढ़ता से थामे रहना और दीन में नई आवष्कारित बिद्अतों से बचे रहना। क्योंकि हर बिद्अत पथभ्रष्टता है।” इस हदीस को इमाम तिर्मज़ी ने रिवायत किया है और हसन कहा है।

और हुजैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, उन्होंने फ़रमाया:

“हर वह इबादत जिसे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा कराम ने इबादत न समझा हो, उसे तुम भी इबादत न समझो। क्योंकि उन्होंने बाद में आने वालों के लए कसी बात की गुन्जाइश नहीं छोड़ी है। अतः ऐ कारियों की जमाअत! अल्लाह तआला से डरो और अपने असलाफ़ -पूर्वजों- के तरीके पर गमन रहो।” इसे इमाम अबू दाऊद ने रिवायत किया है।

और इमाम दारिमी कहते हैं क हमें हकम बिन मुबारक ने सूचना दी, हकम बिन मुबारक कहते हैं

क हमसे अम्र बिन यह्या ने बयान किया, अम्र बिन यह्या कहते हैं क मैंने अपने बाप से सुना, वह अपने बाप से रिवायत करते हैं क उन्होंने फ़रमाया: हम नमाज़े फ़ज़्र से पहले अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु के द्वार पर बैठ जाते और जब वह घर से निकलते, तो उनके साथ मस्जिद रवाना होते। एक दिन की बात है क अबू मूसा अश्अरी रज़ियल्लाहु अन्हु आए और कहा: क्या अबू अब्दुर्रहमान (अब्दुल्लाह बिन मसूद) निकले नहीं? हमने उत्तर दिया: नहीं। यह सुनकर वह भी हमारे साथ बैठ गए। यहाँ तक क इब्ने मसूद बाहर निकले तो हमसब उनकी ओर आगे बढ़े। अबू मूसा अश्अरी उनसे मुखातिब हुए और कहा: ऐ अबू अब्दुर्रहमान! मैं अभी-अभी मस्जिद में एक नई बात देखकर आ रहा हूँ। हालाँ क जो बात मैंने देखी है, वह अल्-हम्दु लल्लाह खैर ही है। इब्ने मसूद ने कहा क वह कौन-सी बात है? अबू मूसा अश्अरी ने कहा क अगर ज़िन्दगी रही, तो शीघ्र ही आप भी देख लेंगे। उन्होंने कहा: वह बात यह है क कुछ लोग नमाज़ की प्रतीक्षा में मस्जिद के भीतर

हल्के बनाए बैठे हैं। उनसब के हाथों में कंकरियाँ हैं और हर हल्के में एक-एक आदमी नियुक्त है, जो उनसे कहता है क सौ बार अल्लाहु अक्बर कहो, तो सब लोग सौ बार अल्लाहु अक्बर कहते हैं। फर कहता है क सौ बार ला-इलाहा इल्लल्लाह कहो, तो सब लोग सौ बार ला-इलाहा इल्लल्लाह कहते हैं। फर कहता है क सौ बार सुब्हानल्लाह कहो, तो सब लोग सौ बार सुब्हानल्लाह कहते हैं! इब्ने मस्ऊद ने कहा क आपने उनसे क्या कहा? अबू मूसा ने जवाब दिया क आपके वचार की प्रतीक्षा में मैंने उनसे कुछ नहीं कहा। इब्ने मस्ऊद ने फरमाया क आपने उनसे यह क्यों नहीं कहा क तुम अपने गुनाह शुमार करो और फर इस बात का जिम्मा ले लेते क उनकी कोई भी नेकी नष्ट नहीं होगी।

यह कहकर इब्ने मस्ऊद मस्जिद की ओर रवाना हुए और हमभी उनके साथ चल पड़े। मस्जिद पहुँचकर इब्ने मस्ऊद उन हल्कों में से एक हल्के के पास खड़े हुए और फरमाया: तुम लोग क्या कर रहे हो? उन्होंने जवाब दिया क ऐ अबू अब्दुर्रहमान?

यह कंकरियाँ हैं, जिनपर हम तक्बीर, तहलील और तस्बीह गन रहे हैं। इब्ने मसूद ने फ़रमाया: इसके बजाय तुम अपने गुनाह गनो और मैं इस बात का जिम्मा लेता हूँ क तुम्हारी कोई भी नेकी नष्ट नहीं होगी। तुम्हारी खराबी हो ऐ उम्मत मुहम्मद! अभी तो तुम्हारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा बड़ी संख्या में उपस्थित हैं, अभी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के छोड़े हुए कपड़े नहीं फटे हैं, आपके बर्तन नहीं टूटे हैं और तुम इतनी जल्दी तबाही के शकार हो गये? कसम है उस ज़ात की, जिसके हाथ में मेरी जान है! तुम या तो एक ऐसी शरीअत पर चल रहे हो, जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शरीअत से -नऊज़ु बिल्लाह- श्रेष्ठ है या फर तुम गुमराही (पथ-भ्रष्टता) का द्वार खोल रहे हो। उन्होंने कहा क ऐ अबू अब्दुर्रहमान! अल्लाह की कसम इस काम से खैर के सवाय हमारा कोई और उद्देश्य न था। तो इब्ने मसूद ने फ़रमाया: ऐसे कतने खैर के आकांक्षी हैं, जो खैर तक कभी नहीं पहुँच पाते। चुनांचे अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम ने हमें बताया है क एक क्रौम ऐसी होगी, जो कुर्आन पढेगी, कन्तु कुर्आन उनके गले से नीचे नहीं उतरेगा। अल्लाह की कसम! क्या पता क उनमें से अ धकतर शायद तुम्हीं में से हो।

यह बातें कहकर इब्ने मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु वहाँ से वापस आ गये।

अम्र बिन सल्मा रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं क इन हल्कों के अ धकांश लोगों को हमने देखा क नहरवान की वड़ाई में वह ख्वारिज के गरोह में शा मल होकर हमसे नेजा जनी कर रहे थे।

अल्लाह तआला ही सहायक और सहयोगी है और उसी पर हमारा भरोसा है।

وصلی اللہ وسلم علی سیدنا محمد وعلی آلہ و صحبه أجمعین.

अनुवादक

(अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह)

atazia@gamil.com